Export of steel

*271. SHRI SANJAY NIRUPAM: Will the Minister of STEEL be pleased to state:

(a) whether the export of steel has increased during the last three years;

(b) if so, the details thereof including the export quantity;

(c) what steps have been taken increase it further;

(d) whether it is a fact that U.S.A. has repealed the tariffs on imported steel; and

(e) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF STEEL (SHRI BRAJ KISHORE TRIPATHY): (a) to (e) A Statement is laid on the table of the House.

Statement

(a) and (b) Yes, Sir. The details of exports of finished steel for the last three years and during April-November, 2003 are given in the table below:

(in million tonnes)

Item	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 (Apr-Nov) (Provisional)
Finished steel	2.664 (0.22)	2.704 (1.50)	4.506 (66.6)	3.100 (32.53)

Source: Joint Plant Committee
(figures in parenthesis indicate% growth over the corresponding period of the previous year)

(c) In a liberalised scenario the Government plays the role of a facilitator and provides an enabling environment through policy initiatives to foster growth of the steel industry. Some of the steps taken in this context for boosting exports are as follows:

The medium term export strategies of the Government emphasize on exploring alternate export markets and improved export incentives

under the Duty Exemption/Remission Schemes provided by the Government of India.

Extending support to the industry in dealing with cases of trade action like imposition of anti-dumping, countervailing and safeguard duties, with the concerned countries or at the WTO.

Support by the different wings of Government to boost exports, disseminate information pertaining to global trade and WTO related issues, organisation of seminars/workshops to facilitate greater interaction between the exporting community etc.

(d) and (e) Yes, Sir. The US has repealed the steel safeguard measures that had been put in place in March 2002, with effect from 5th December, 2003. While announcing the decision the US President has stated that the safeguard measures had achieved their purpose and that the changed economic circumstances gave cause for lifting them.

श्री संजय निरूपम: उपसभापति महोदया, इसमें कोई शक नहीं कि स्टील का एक्सपोर्ट बढ़ रहा है और पिछले तीन वर्षों में बहुत अच्छे ढंग से बढ़ रहा है। मै सबसे पहले मंत्री महोदय से यह जानना चाहूंगा कि किन किन देशों में हमारे स्टील एक्सपोर्ट की डिमांड बढ़ी है? जहां तक मेरी जानकारी है, हमारा जो टोटल एक्सपोर्ट बढ़ा है, उसका 50 परसेंट चीन में जा रहा है। चीन में हमारा एक्सपोर्ट इसलिए बढ़ा है, या पूरी दुनिया के स्टील की डिमांड इसलिए वहां बढ़ी है क्योंकि वर्ष 2008 में वहां ओलंपिक होने वाला है जब वर्ष 2008 में ओलंपिक हो जाएगा और उनका सारा डेवलपेंट का काम पूरा हो जाएगा, जो उसके बाद एक्सपोर्ट की इसी ग्रोथ रेट को मेण्टेन करने के लिए आपके पास क्या रणनीति है, क्या स्ट्रेटजर है, क्या प्लानिंग है? इसी से जुड़ा हुआ मेरा सवाल यह भी है कि हर साल एक्सपोर्ट के जरिए हमारे पास कितना फॉरेन एक्सचेंज आ रहा है।

श्री बज्र किशोर त्रिपाठी: उपसभापति महोदया, लिबरालाइज सीनेरियों में गवर्नमेंट का रोल बहुत लिमिटेड होता है, लेकिन गवर्नमेंट की जो पॉलिसी है, फोर एग्जाम्पल एग्जिम पॉलिसी 2002-2007 जो जनरल पालिसी है इसके तहत इसे बढ़ाने की कोशिश कर रहे है और गवर्नमेंट की जो पॉलिसी है, जो उनकी परमानेंट मार्केट थी उसको बढ़ाकर दूसरी मार्केट के लिए कोशिश कर रहे है। चीन में अभी ज्यादा एक्सपोर्ट हो रहा है, यह बात सही है, लेकिन दूसरी कंट्रीज में भी हमारा एक्सपोर्ट बढ़ रहा है, और आगे और बढ़ेगा। इसमें कोई संदेह नहीं है। जहां तक वेल्यू की टर्म है, उसमें वर्ष 2001-2002 में हमारा यह 4262.6 करोड़ हुआ था, वर्ष 2002-2003 में 8733. 8 करोड़ हुआ था और इन पांच महीनों अप्रैल से अगस्त, 2003 में यह 4163.2 करोड़ हुआ है, जो उम्मीद है बढ़कर 10 हजार करोड़ हो जाएगा। इससे यह मालूम होता है कि यह ट्रेड बढ़ रहा है।

श्री संजय निरूपम: उपसभापति महोदया, यह बहुत खुशी की बात है कि 10 हजार करोड़ की फॉरेन एक्सचेंज इस स्टील एक्सपोर्ट से आएगा। मंत्री महोदया ने अभी कहा कि एक्सपोर्ट को बढ़ाने के संबंध में सरकार की भूमि का बहुत लिमिटेड है, एक बड़ी मर्यादित भूमिका है, इस पर मैं आपको एक सुझाव देना चाहूंगा। हमारा जितना स्टील एक्सपोर्ट हो रहा है, उससे ज्यादा हमारा आयरन-ओर एक्सपोर्ट हो रहा है। दुनिया के कई ऐसे देश है, जो आयरन-ओर प्रोडयूस नहीं करते है लेकिन हमारा आयरन ओर लेकर पूरे वर्ल्ड में वे स्टील मार्केट के लीडर बने हुए है, जिसमें जापान का उदाहरण है। तो जो आयरन-ओर हम एक्सपोर्ट कर रहे हैं उनकी कीमत 40 से 50 डॉलर प्रति टन के आसपास है, जबकि स्टील एक्सपोर्ट करते है तो उसका लगभग दस गुना ज्यादा भाव हमें मिलता है, इसलिए इस आयरन-ओर का एक्सपोर्ट कम किया जाए, स्टील एक्सपोर्ट को ज्यादा प्रोमोट किया जाए और जो आयरन-ओर हमारे पास है उसको फिनिश्ड स्टील में कन्वर्ट करके, बदलकर के उसको एक्सपोर्ट किया जाए ताकि हमारे देश में ज्यादा फॉरेन एक्सचेज आ सके।

श्री बज्र किशोर त्रिपाठी: मैडम, आयरन-ओर का अभी जो एक्सपोर्ट हो रहा है, हमारी गवर्नमेंट की पालिसी है कि जो हायर ग्रेड का आयरन है, जिसकी एफ ई क्वालिटी ज्यादा है इसको लिमिटेड क्वालिटी मे एक्सपोर्ट किया जाए और लो आयरन -ओर, जो लो ग्रेड का है इसको ज्यादा एक्सपोर्ट करने में कुछ रिस्ट्रक्शन नहीं है। लेकिन, अभी जितनी जो हमारी गवर्नमेंट संस्था है, जो माइंनिग कर रही हैं, एनएमडीसी या दूसरी, उनको गवर्नमेंट से इंस्ट्रक्शन गई हैं कि डोमेस्टिक जो रिक्वायरमेंट हो पहले उसकी मीट करेंगे, इसके बाद इंटरनेशनल जो कमिटमेंट है या लोंग टर्म कुछ कांट्रेक्ट है उसकी मीट करेंगे और उसके बाद फिर एक्सपोर्ट का करेंगें। डॉमस्टिक रिक्वायरमेंट मीट करने के बाद जो प्राइवेट सैक्टर हो, गवर्नमेंट सैक्टर हो, देश का जो रिक्वायरमेंट है उसकी मीट करने के बाद हम एक्सपोर्ट कर सकते है लेकिन उससे पहले नहीं कर पाएंगं। दूसरी भी एक बात है, हमारा आयरन का डिपोजिट बहुत ज्यादा है। इसको रेस्ट्रक्शन करने के लिए अभी कोई संकट नहीं है। लेकिन ज्यादा अच्छी क्वालिटी का आयरन ओर ज्यादा एक्सपोर्ट नहीं करने के लिए भी रेस्ट्रक्शन है।

SHRI SANTOSH BAGRODIA: Madam, at present there is big demand in the world, that is why, more steel is being exported. But this situation is not going to remain, say, after two or three years. Do you have any plans to see that these exports continue? Maintaining the quality of steel is very important. Do you have any agency to check the quality of steel, which goes there, so that India can incorporate its name, and can improve upon it? And, even if there is less demand after two years, will the pace in our export continue? Do you have any plan for that?

SHRI BRAJ KISHORE TRIPATHY: Madam, we are maintaing the requisite quality. There is no difficulty in the maintenance of quality. And the quality of production of steel is as per the required parameters. It meets all the parameters of international standards. In respect of quality and other aspects also, we are very much competitive In price also, we are very much competitive because we have the advantage of availability of cheap labour, and raw materials are also available in plenty in our country . ...(*Interruptions*)... We are maintaining good quality: there is no difficulty in that. Otherwise, we cannot have any exports. After all, every country has its own system of maintenance of quality, and we are maintaining the quality that is needed for exports.

SHRI RAJEEV SHUKLA: Madam, I would like the hon. Minister of reply to this. The domestic prices have gone up steeply because of growth in exports. But instead of increasing the production, why is the Government thinking of importing steel in the name of opening up the trade barriers?

SHRI BRAJ KISHORE TRIPATHY: Madam, of course, it is true that we had large quantities of exports during the last two to three years. The imports were limited to 1.5 million tonnes, whereas our exports had gone beyond four million tonnes only as per the WTO guidelines had parameters, we can have some restrictions. That parameter would be according to the WTO guidelines. The domestic price has not increased so much. No doubt, it has been increasing, but during the last three or four years, the price has come down drastically . Internationally, during the years 1997-98, and 1998-99, the price of steel had gone down, and in the domestic market also, the price had gone down. Now, whatever the increase in price may be, it has not gone beyond the 1997-98 price. There is doubt that it increased during the last year, or during the last 14 months. Yes, the price has increased. So, we have instructed all the producers—we are holding meetings with them and the Secretary held meetings with them—to see that there should not be any short supply for the end users, and the consumers should not suffer for want to material. The Government has very little role in it. The price depends entirely on the market conditions. The Governments cannot control this. The market economy is completely free. The steel sector is completely free. There is no Government control at all. It is completely decontrolled. So far as the price in concerned, the Government cannot impose anything. But we

have instructed them that whatever be the landed cost of the imported material, the domestic price should not go beyond the landed cost of the steel. That we have instructed, and we are looking into it that there is no short supply for the end users.

श्री परमेश्वर कुमार अग्रवाला: महोदया, मैं मंत्री महोदय का ध्यान एक विशेष स्थिति की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं। स्टील प्रोडक्शन में मेटलर्जिकल कोक की आम भूमिका है। जितना स्टील प्रोडक्शन होता है उससे आधा कम से कम मेटलर्जिकल कोक की आवश्यकता होती है। वर्ल्ड मार्केट में जो मेटलर्जिकल कोक था जिसकी कीमत 98 डॉलर थी वह अब 250 डॉलर हो गई है।...(व्यवधान)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: The question hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO STARRED QUESTIONS

Floating of global tenders by Railways

*261. SHRI ABANI ROY: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether Railways have ignored the claims of the Ranchi-based Heavy Engineering Corporation while awarding works as reported in the media;

(b) if so, the facts and details thereof;

(c) whether Railways have been floating global tenders for many of the important works and ignoring the indigenous companies; and

(d) if so, the corrective steps Government propose to take in this regard?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI NITISH KUMAR): (a) and (b) No, Sir. No works, as claimed by the Statesman of September 15, 2003, have been awarded to a foreign company ignoring the claims of Ranchi based Heavy Engineering Corporation.

(c) No Sir. Indigenous companies are also eligible to participate in Global Tenders and their offers are given due consideration on merits.

(d) Does not arise.